B.A.-I अभिज्ञानशाकुन्तलम्
श्लोकानुवाद

डॉ. आभा द्विवेदी (सहायक आचार्य)
वैशाली महिला महाविद्यालय, हाजीपुर

कुल्याम्भोभिः पवनचपलैः शाखिनो धौतमूला
भिन्नो रागः किसलयरुचामाज्यधूमोद्गमेन।
एते चार्वागुपवनभुवि च्छिन्नदर्भाङ्कुरायां
नष्टाशङ्का हरिणशिशवो मन्दमन्दं चरन्ति ॥1/15॥

वायु के कारण चञ्चल नालियों (कृत्रिम नदियों) के जल से वृक्षों की जड़ें धुली हुई हैं। (हवन किए गए) घृत के धूम (धुएँ) के उठने से कोमल पत्तों (किसलयों) की कान्ति की लालिमा नष्ट हो गयी है और ये निःशङ्क (निर्भीक) हरिणों के बच्चे, जहाँ पर कुशों के अङ्कुर काट लिए गए हैं, ऐसी उद्यान भूमि पर समीप में ही धीरे धीरे विचरण कर रहे हैं।1/15।

शान्तमिदमाश्रमपदं स्फुरति च बाहुः कुतः फलमिहास्य।
अथवा भवितव्यानां द्वाराणि भवन्ति सर्वत्र ॥1/16॥

यह आश्रम-स्थान शान्त है और मेरी (दाहिनी) भुजा फड़क रही है। यहाँ इसका (दाहिनी भुजा फड़कने का) फल (सुन्दर स्त्री की प्राप्ति) कहाँ (अर्थात कैसे प्राप्त हो सकता है)? अथवा अवश्यम्भावी (होनी) घटनाओं के द्वार (मार्ग, उपाय) सर्वत्र (अर्थात कहीं भी) उपस्थित हो जाते हैं।1/16।

शुद्धान्तदुर्लभमिदं वपुराश्रमवासिनो यदि जनस्य।
दूरीकृताः खलु गुणैरुद्यानलता वनलताभिः॥1/17॥

अन्तःपुर (रनिवास) में दुर्लभ यह शरीर (लावण्य) यदि आश्रम में निवास करने वाले जन (तापस-कन्याएँ) का है, (तो) निश्चित रूप से वनलताओं (आश्रम-कन्याओं) द्वारा उपवन की लताएँ (अन्तःपुर की सुन्दर स्त्रियाँ) (सौन्दर्य, लावण्यादि) गुणों से तिरस्कृत कर दी गयी हैं।1/17॥

डॉ. आभा द्विवेदी (सहायक आचार्य)
वैशाली महिला महाविद्यालय, हाजीपुर

इदं किलाव्याजमनोहरं वपुस्तपःक्षमं साधयितुं य इच्छति।
ध्रुवं स नीलोत्पलपत्रधारया शमीलतां छेत्तुमृषिर्व्यवस्यति॥ 1/18॥

जो ऋषि (कण्व) अकृत्रिम (स्वाभाविक रूप से) सुन्दर इस (शकुन्तला) के शरीर को, खेद है कि तपस्या के योग्य बनाने की इच्छा रखते हैं, वह निश्चय ही नीलकमल के पत्ते की धार (अग्रभाग) से शमी की लता को काटने का प्रयत्न कर रहे हैं।

सरसिजमनुविद्धं शैवलेनापि रम्यं
मलिनमपि हिमांशोर्लक्ष्म लक्ष्मीं तनोति।
इयमधिकमनोज्ञा वल्कलेनापि तन्वी
किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम्॥ 1/20॥

शैवाल (सरोवर के जल में तैरने वाली हरी घास) से आच्छादित भी कमल रमणीय होता है, मलिन कलङ्क भी चन्द्रमा की शोभा को बढ़ाता है। वल्कल वस्त्र से भी यह कृशाङ्गी (शकुन्तला) अत्यन्त सुन्दर लग रही है, क्योंकि सुन्दर आकृति (रमणीय शारीरिक गठन) वालों के लिए कौन सी वस्तु अलङ्कार नहीं होती (अर्थात् उनके द्वारा धारण की गयी सभी वस्तुएँ उनकी शोभा को बढ़ाती ही हैं)।

अधरः किसलयरागः कोमलविटपानुकारिणौ बाहू।
कुसुममिव लोभनीयं यौवनमङ्गेषु सन्नद्धम्॥ 1/21॥

अधरोष्ठ नवपल्लव (किसलय) के समान लाल हैं, भुजाएँ कोमल शाखाओं का अनुकरण करने वाली (अर्थात् पतली) हैं, अङ्गों में पुष्प की भाँति लुभावना (मनोहर) यौवन (तारुण्य) व्याप्त है।

असंशयं क्षत्रपरिग्रहक्षमा यदार्यमस्यामभिलाषि मे मनः।
सतां हि सन्देहपदेषु वस्तुषु प्रमाणमन्तःकरणप्रवृत्तयः॥ 1/22॥

(यह शकुन्तला) निस्सन्देह क्षत्रिय द्वारा पत्नी रूप में ग्रहण (विवाह) करने योग्य है, जिससे कि मेरा यह श्रेष्ठ (आर्य) मन इस (शकुन्तला) में अभिलाषा से युक्त है; क्योंकि सन्देहास्पद वस्तुओं (विषयों) में सज्जनों के अन्तःकरण की प्रवृत्तियाँ (अन्तरात्मा की ध्वनि) ही प्रमाण (निर्णय का कारण) होती हैं।

B.A. I

अभिज्ञानशाकुन्तलम्

श्लोकानुवाद

डॉ. आभा द्विवेदी (सहायक आचार्य)
बंगाली महिला महाविद्यालय (गाजीपुर)

चलापाङ्गां दृष्टिं स्पृशसि बहुशो वेपथुमतीं
रहस्याख्यायीव स्वनसि मृदु कर्णान्तिकचरः।
करौ व्याधुन्वत्याः पिबसि रतिसर्वस्वमधरं
वयं तत्त्वान्वेषान्मधुकर हतास्त्वं खलु कृती ॥ 1/23॥

हे भ्रमर (तुम), चञ्चल नेत्रप्रान्त वाली तथा काँपती हुई दृष्टि (नेत्रों) को बारम्बार स्पर्श कर रहे हो। रहस्य (गुप्त बात) कहने वाले की भाँति कान के समीप विचरण करते हुए मधुर गुञ्जार (गुञ्जन) कर रहे हो। हाथों को हिलाती हुई (इस शकुन्तला) के, प्रेम के सर्वस्वभूत अधर का पान कर रहे हो। हम (राजा दुष्यन्त) तो तत्त्व के अन्वेषण में ही मारे गए, तुम निश्चय ही कृतकृत्य (सफल) हो गए ।1/23॥

कः पौरवे वसुमतीं शासति शासितरि दुर्विनीतानाम्।
अयमाचरत्यविनयं मुग्धासु तपस्विकन्यासु ॥1/24॥

दुष्टों के शासक (दण्ड देने वाले) पुरुवंश में उत्पन्न (राजा दुष्यन्त) के पृथ्वी (भूमण्डल) का शासन करने पर (शासनकालमें) यह कौन इन भोली-भाली तपस्वी कन्याओं के साथ अशिष्ट आचरण कर रहा है? 1/24।

मानुषीषु कथं वा स्यादस्य रूपस्य सम्भवः।
न प्रभातरलं ज्योतिरुदेति वसुधातलात् ॥1/25॥

मानव-स्त्रियों (मनुष्यलोक की स्त्रियों) में ऐसा (अनुपम) सौन्दर्य सम्भव कैसे हो सकता है? (अर्थात् नहीं हो सकता)। प्रभा से देदीप्यमान विद्युत् (आकाशीय बिजली) पृथ्वी के तल से उत्पन्न नहीं होती।